International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: (RJIF 5.22)
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 2; February 2016; Page No. 28-31

मनुष्यता और साहित्य

डॉ. अभिषेक कुमार मिश्र

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय ढाढा बुजुर्ग, हाटा, कुशीनगर

आचार्य पंडित हजारी प्रसाद द्वेदी का विचार है – '' मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ | जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति,हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके,जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदुखकातर और संवेदनशील न बना सके, साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है |"[१] *(मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है –पंडित हजारी प्रसाद द्वेदी)* |आचार्य द्वेदी की पंक्तियाँ साहित्य के उद्देश्य, उसके लक्ष्य और उसके विराट मानव पक्ष की स्पष्ट घोषणा करती हैं | वे उस साहित्य को, साहित्य कहने में संकोच करते हैं, जो मनुष्य की मनुष्यता का विस्तार नहीं करतीं |मनुष्य की संवेदना का विस्तार करना साहित्य का स्वीकृत धर्म है |साहित्य की सार्थकता यह है कि वह अनास्था,घुटन,संत्रास, ऊब और उदासी के बीच टूटते हुए जीवन को शक्ति दे|(*ध्यातव्य -रचना के सरोकार-विश्वनाथ प्रसाद तिवारी पृष्ठ २०)* | अज्ञेय जी का एक निबंध है *'साहित्य बोध:आधुनिकता के तत्व'*,जिसमे उन्होंने समकालीन सन्दर्भ में 'साहित्य- बोध' की अपेक्षा 'संवेदना- बोध' को अधिक सारमय संज्ञा माना है | उनका विचार है कि "संवेदना वह यंत्र है जिसके सहारे जीव- व्यष्टि अपने से इतर सब कुछ से सम्बन्ध जोड़ती है-वह सम्बन्ध एक साथ ही एकता का भी है और भिन्नता का भी,क्योंकि उसके सहारे जहाँ जीव-व्यष्टि अपने से इतर जगत को पहचानती है वहां उससे अपने को अलग भी करती है |"[२](साहित्य बोध:आधुनिकता के तत्त्व-अज्ञेय)|

पंडित हजारी प्रसाद द्वेदी ने साहित्य की तीन कोटियाँ निर्धारित की हैं – प्रथम- *सूचनात्मक साहित्य*, द्वितीय- *विवेचनात्मक साहित्य*, त्रितीय- *रचनात्मक साहित्य*(ध्यातव्य- साहित्य सहचर पृष्ठ- १)| सूचनात्मक साहित्य वह साहित्य है, जिससे हमारी जानकारी बढ़ती है, नूतन सूचनाएँ प्राप्त होती किन्तु हमारी बोध शक्ति एवं अनुभति कम उत्तेजित होती है | विवेचनात्मक साहित्य से हमारी जानकारी एवं बोध शक्ति दोनों ही समृद्ध एवं सचेष्ट होती है| रचनात्मक साहित्य से न केवल हमारी जानकारी बढती है वरन हमारी बोध-शक्ति और अनुभूति का भी विस्तार होता है | यह साहित्य हमें सुख-दुःख की व्यक्तिगत संकीर्णता तथा सांसारिक स्वार्थों से ऊपर उठाती है और मानव जाति के साथ प्राणी मात्र के – दुःख –शोक ,राग- विराग, आव्ह्लाद –प्रमोद को समझने की सहानुभूतिमय दृष्टि देती है| ***आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल*** का विचार है "कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक सामान्य की भावभूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरुप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है |"[३] (*रसमीमांसा पृष्ठ ५*)| आचार्य शुक्ल का कविता शब्द साहित्य मात्र का पर्याय है| ***बाबू श्याम सुन्दर दास*** का यह कथन कि "काव्य का वही अर्थ है जो साहित्य शब्द का वास्तविक अर्थ है| .....किसी पुस्तक को हम साहित्य या काव्य की उपाधि तभी दे सकते हैं जब जो कुछ उसमे लिखा गया है वह कला के उद्देश्यों की पूर्ति करता हो|साहित्य के अंतर्गत कविता,नाटक,चम्पू, उपन्यास, आख्यायिकाएं आदि सभी आ जाते हैं|"[४] (*साहित्यालोचन- पृष्ठ ३१*)| निश्चित रूप से कविता के विस्तृत पक्ष को लेकर है | साहित्य मानव हृदय को इस प्रकार कोमल एवं संवेदनशील बनाता है कि वह अपने क्षुद्र स्वार्थ को भूलकर प्राणिमात्र के दुःख –सुख को अपना समझने लगता है –सारी दुनिया के साथ आत्मीयता का अनुभव करने लगता है | *(द्रष्टव्य - साहित्य सहचर- पृष्ठ २)*| सहानुभूति के इसी धरातल से बाल्मीकि बहेलिये को शाप देते हुए कहते हैं –

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वंगमः शाश्वती समाः |
यत्क्रौंचमिथुनादेकंवधी काममोहितं | *(बाल्मीकि रामायण)*

महर्षि बाल्मीकि के इस विराट मानव- पक्ष का दर्शन कर आचार्य शुक्ल कहतें हैं "आदि कवि बाल्मीकि की वाणी इसी सौन्दर्य के उद्घाटन-महोत्सव का दिव्य-संगीत है |"[५] (भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रुपरेखा –रामचंद्र तिवारी – पृष्ठ-७)| आचार्य भरतमुनि ने नाट्य(साहित्य) का प्रयोजन बताते हुए कहा हैं –

दुखार्तानाम श्रमार्तानाम शोकार्तानाम तपस्विनाम |
विश्रांति जननम काले नाट्यमेतद भविष्यति ||
धर्म्यं यश्स्यमायुश्यमम हितम बुद्धिविवर्धनम|
लोकोपदेशजननम नाट्यमेतद भविष्यति || (*नाट्यशास्त्र*)

आचार्य भरतमुनि के इस प्रयोजन से स्पष्ट होता है कि दुःख,श्रम,शोक से आर्त, तपस्वियों के विश्राम के लिए तथा धर्म यश, आयु-वृद्धि, हित-साधन, बुद्धि वर्धन तथा लोक उपदेश के निमित्त नाट्य (साहित्य) की रचना होगी| अर्थात मानवता की स्थापना के लिए ही नाटक (साहित्य) की सर्जना होगी | *गोस्वामी तुलसीदास* कहतें हैं-

कीरति भनिति भूति भलि सोई |
सुरसरि सम सब कहँ हित होई | (*रामचरितमानस*)

कीर्ति, कविता और संपत्ति वही उत्तम है, जिससे (बिना किसी प्रकार के भेद भाव के) सबका कल्याण हो | जैसे देवनदी गंगा अपने जल की शीतलता,निर्मलता और पवित्रता में सबका हित साधन करती है वैसे ही कविता (साहित्य) को भी अपनी सहजता, सरसता और औचित्यमयता से सबका हित साधन करना चाहिए | तुलसी और उनके साहित्य की यह मानवीयता है,जिसमें मानव मात्र के कल्याण

की कामना है | मलिक मुहम्मद जायसी का काव्य प्रेम और सौन्दर्य की दिव्यता का काव्य है | उन्होंने प्रेम का वह दिव्य रूप प्रस्तुत किया,जो मनुष्य को देवता बना देता है-

औ मन जानि कवित अस किन्हां| मकु यह रहै जगत मह चीन्हा|
धनि सोई जस कीरति जासू | फूल मरै, पै मरै न बासु ||(पद्मावत)

महाभारत में कहा गया है-

न त्वहम कामये राज्यं न स्वर्गम नापुनर्भवं
कामये दुःख तप्तानाम प्राणीनाम आर्तिनाशनम||(*महाभारत*)

इशावाश्योपनिषद में आता है

ईशावाश्यमिदम सर्व यत्किंच जगत्यां जगत|
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कश्यस्विद धनं |(ईशावाश्योपनिषद)

साहित्य शब्द संस्कृत के ***'सहित'*** शब्द से बना है, जिसका अर्थ है साथ –साथ| इसलिए साहित्य शब्द का अर्थ हुआ साथ साथ रहने का भाव | महान दार्शनिक ***राधाकृष्णन*** का मानना था ***"कलाएँ मैत्री और समझदारी की भाषा बोलती हैं***|"[६] (भारतीय संस्कृति कुछ विचार-*डॉ राधाकृष्णन* पृष्ठ- ८८)| साहित्य में जो सहित अर्थात साथ साथ रहने का भाव है वह एक प्रकार से मैत्री और समझदारी (विवेक) का भाव है| ***मुक्तिबोध*** ने साहित्य के दो पहलू स्वीकार किये हैं –प्रथम- मनोरंजन और दूसरा- मनुष्यता| उनका विचार है कि – "साधारणतया साहित्य के दो पहलू रहें हैं | एक तो वह जिससे मनोरंजन हो और दूसरा वह जिससे हम अधिक मानवीय होते चलें |पहला केवल मनोरंजन ही मनोरंजन है, उसके आगे कुछ नहीं | और दूसरा किसी आदर्श को लेकर चलता है |"[७] (साहित्य के दृष्टिकोण –गजानन माधव मुक्तिबोध)| आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल ने भी मानव ह्रदय को लोक सामान्य की भावभूमि पर ले जाने की बात कहकर साहित्य के उद्देश्य को एक व्यापक आयाम दिया |उनकी दृष्टि में भी कविता (साहित्य) केवल सहृदय को आव्हादित ही नहीं करती वरन उसके ह्रदय को भी सभी प्रकार के स्वार्थों से मुक्त करके उसे उस भूमि पर ले जाती है, जहाँ मनुष्य मात्र में एक ही भाव धारा तरंगित है, जो मनुष्यता की सहज भूमि है | *साहित्य की साधना निखिल विश्व के साथ एकत्व करने की साधना है|(साहित्य सहचर- पृष्ठ- ५)*|

साहित्य मनुष्य की अंतर्रचना को बदलने का काम करता है | उसके अन्तः करण का परिमार्जन करता है, उसकी चेतना का नूतन संस्कार करता है और संस्कृति का विकास करता है | *अज्ञेय* जी का विचार है-"यदि हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि विकास की अगली सीढी मानवीय चेतना का ही नूतन संस्कार है,यदि यह स्थापना ठीक है तो तात्कालिक समस्या है संस्कृति की जीवन के मानों की मूल्यों के अभिनव मूल्याङ्कन की क्योंकि चेतना का संस्कार इसी मार्ग से हो सकता है|.....चेतना का विकास मूलतः संस्कृति का विकास है |"[८]*(चेतना का संस्कार-अज्ञेय)*| साहित्य मनुष्य के जीवन से उत्पन्न होता है और उसे प्रभावित भी करता है| साहित्य में हम उन बातों का अध्ययन करते हैं जिसको हमने नजदीक से देखा है,अनुभव किया है,सोचा और समझा है| जीवन के वो पहलू जो इन्शान को सबसे नजदीक से और स्थाई रूप से प्रभावित करते है उनको समझने का एकमात्र माध्यम साहित्य है | इसलिए जो अनुभूत नहीं है उसे साहित्य भी नहीं कहा जा सकता है | एक पश्चिमी विद्वान का विचार है कि –"*भाषा के माध्यम से जीवन की अभिव्यक्ति का नाम ही साहित्य है* |"(*साहित्य सहचर-पेज ३*)| यही कारण है कि कुछ विचारकों ने साहित्य को जीवन की व्याख्या माना है |साहित्य जीवन की ऐसी व्याख्या है जो जीवन के अर्थ का न केवल विस्तार करती है वरन जीवन में अर्थ की सम्भावना को कभी ख़त्म नहीं होने देती है | डा रामस्वरुप चतुर्वेदी का विचार है-"....रचना जीवन के अर्थ का विस्तार करती है तो आलोचना फिर रचना के अर्थ का| यह एक अनंत संभावनाओं का जीवन क्रम है |.....इस तरह दोनों का बुनियादी सरोकार एक है—जीवन में अर्थ की संभावना को ख़त्म न होने देना|"[९] (*कविता का पक्ष-रामस्वरूप चतुर्वेदी-पृष्ठ १८*)|

साहित्य मनुष्य के जीवन से उत्पन्न ही नहीं होता वरन द्रेदी जी के शब्दों में जीवन में ही रहता है और उसके लिखे और पढ़े जाने का करण भी जीवन में ही खोजना चाहिए| जीवन में ही साहित्य को समझने और ग्रहण करने की शक्ति विद्यमान है | जीवन और साहित्य के बीच ऐसा घनिष्ठ सम्बन्ध है |साहित्य में हम अपनी जिंदगी को सच्चे रूप में देखते हैं और पहचानते हैं| उसके मूल्यों के प्रति सजग होतें हैं |जीवन की गरिमा का और उसकी संभावना का एहसास करतें हैं | वह जीवन के भीतर की अनंत संभावनाओं को उद्घाटित कर देता है| मनुष्य के भीतर छिपी हुई मानवता और नैतिकता को जगाने का एक सशक्त माध्यम है साहित्य| ***'बाणभट्ट की आत्मकथा'*** में भट्टिनी बाणभट्ट से कहती है- "तुम इस आर्यावर्त के द्वितीय कालिदास हो,तुम्हारे मुख से निर्मल वाग्धारा झरती रहती है....तुम्हारे मुख में सरस्वती का निवास है| तुम इस म्लेच्छ कही जाने वाली निर्दय जाति के चित्त में संवेदना का संचार कर सकते हो, उन्हें स्त्रियों का सम्मान करना सिखा सकते हो,बालकों को प्यार करना सिखा सकते हो|...."[१०]('रचना के सरोकार' में उद्धृत - पृष्ठ २१-विश्वनाथ प्रसाद तिवारी)| भट्टिनी का यह कथन मनुष्यता की अपील करता है | कामायनी में श्रद्धा मनु से कहती है-

बनो संसृति के मूल रहस्य,तुम्हीं से फैलेगी वह बेल;
विश्व- भर सौरभ से भर जाये सुमन के खेलो सुन्दर खेल
शक्ति के विद्युत् कण,जो व्यस्त विकल बिखरें हैं, हो निरुपाय;
समन्वय उसका करे समस्त विजयिनी मानवता हो जाये ! (कामायनी)

मनुष्यता तभी विजयी हो सकती है जब मानव की बिखरी हुईं शक्तियां एकत्र होकर रचनात्मक दिशा की ओर सृजनात्मक कर्म के साथ अग्रसर हो | अमेरिकी कवि समीक्षक ***केनेथ रेक्सराथ*** ने सही कहा है कि "संसार के विनाश के खिलाफ रचनात्मक कर्म ही एकमात्र बचाव है|"[११] (रचना के सरोकार-पृष्ठ २१-विश्वनाथ प्रसाद तिवारी)| यह जो रचनात्मक कर्म है वही एक प्रकार से रचना है |रचना में न केवल हम स्वंय को देखते हैं वरन उससे पुनः सृजन की प्रेरणा भी प्राप्त करते हैं |रुसी लेखक **मैक्सिक गोर्की** की कहानी 'एक पाठक' के अनुसार –"साहित्य का उद्देश्य है- खुद अपने को जानने में मनुष्य की मदद करना, उसके आत्मविश्वास को दृढ़ बनाना और उसके सत्यान्वेषण को सहारा देना| लोगों की अच्छाइयों का उद्घाटन और बुराइयों का उन्मूलन करना |लोगों के ह्रदय में हयादारी,गुस्सा और साहस पैदा करना |ऊँचे उद्देश्यों के लिए शक्ति बटोरने में उनकी मदद करना और सौन्दर्य की पवित्र भावना से उनके जीवन को शुभ्र बनाना |"[१२](सृजनशीलता-रमेश उपाध्याय-पृष्ठ ७९)|कोई भी कलाकार,लेखक,वैज्ञानिक तभी और वहीँ तक सृजनशील होता है जब और जहाँ तक वह मानवीय होता है | सृजनशीलता किसी का कोई विशेषाधिकार नहीं वरन मानव मात्र का एक सहज मानवीय गुण है| एक

मानवीय मूल्य,एक मानवीय विचार, एक मानवीय कर्तव्य और एक मानवीय व्यवहार भी है| रचनाशीलता मनुष्य का स्वाभाविक कर्म है |

साहित्य हमें जीवन में सम्मिलित करता है|जीवन को जीने और भोगने की शक्ति देता है | साहित्य हमें जगाता है लेकिन वैसे नहीं जैसे भगवती जागरण हो| वह हमें भीतर से जगाता है |जागने वाले को पता भी नहीं चलता और वह जग भी जाता है| साहित्य हमें झकझोरता है लेकिन बाहर से नहीं बल्कि भीतर से|उससे हम जिन्दगी के उस संघर्ष के लिए तैयार होते हैं, जिसमे हम बार-बार पराजित हो चुकें हैं | इसीलिए आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल कविता को सर्वाधिक प्रयोजनीय वास्तु मानतें हैं |उनका विचार है –"मनुष्य अपने ही व्यापारों का ऐसा सघन और जटिल मंडल बांधता चला आ रहा है, जिसके भीतर बंधा-बंधा वह शेष सृष्टि के साथ अपने हृदय का सम्बन्ध भूला-सा रहता है| इस परिस्थिति में मनुष्य को अपनी मनुष्यता खोने का डर बना रहता है|इसी से अन्तः प्रकृति में मनुष्यता को समय-समय पर जागते रहने के लिए कविता मनुष्य जाति के साथ चली आ रही है और चली चलेगी|"[१३] (चिंतामणि-प्रथम भाग-'कविता क्या है' नामक निबंध)| आचार्य पंडित महावीर प्रसाद द्वेदी ने कवियों को अवतारी की संज्ञा देते हुए उनकी रचना प्रतिभा को अलौकिक माना है |उनका कथन है-"...कवि भी एक प्रकार के अवतार हैं|.....कवि भी धर्मसंस्थापनार्थाय उत्पन्न होते हैं |तुलसीदास ने कवि होकर वैष्णव धर्म की स्थापना की है ;मतमतान्तरों का भेद मिटाया है और ज्ञान के पंथ को कृपाण की धार बताया है| प्रायः उसी प्रकार का काम,दूसरे रूप में सूरदास,कबीर और लल्लूलाल ने किया है| हरिश्चंद्र ने शूरता,स्वदेश-भक्ति और सत्य प्रेम का धर्म चलाया है|"[१४] (कवि कर्त्तव्य-पंडित महावीर प्रसाद द्वेदी)| कवि की अलौकिकता इस बात में है कि वह अपनी रचना से समस्त प्रकार के भेद भाव को मिटाकर मानवता की स्थापना करता है |

कबीरदास,सूरदास,तुलसीदास,लल्लूलाल,भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र आदि ने मनुष्यता के ही मार्ग को प्रशस्त किया है | प्लेटो ने भी कवि को दैवीय शक्ति से संपन्न स्वीकार किया है | इसके मूल में भी उसने कवि में अलौकिक प्रतिभा का होना बताया है |

मिलान कुंदेरा एक पश्चिमी साहित्यकार है| उसका मानना है "कवि यानी सर्जक राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक होता है, (जैसे- कामू,गोइठे,मिकिनिज और पुश्किन), कवि क्रांति का प्रवक्ता होता है (जैसे-बिरेंगर,पेटोफी,मायकोवस्की और लोर्का), वह इतिहास की आवाज होता है (जैसे –ह्यूगो और ब्रेतां),वह किसी धार्मिक पंथ की एक पौराणिक गाथा की तरह होता है (जैसे-पेट्रार्क,बायरन,रिम्बो और रिल्के) मगर इन सबसे ऊपर वह एक ऐसे अलंघ्य मूल्य का प्रतिनिधि होता है,जिसे कविता कहते हैं|"[१५] (आलोचना समय और साहित्य-पृष्ठ १७-रमेश दवे)| यहाँ जो अलंघ्य मूल्य हैं, वे मनुष्यता के मूल्य हैं | रचनाकार यानी सर्जक मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधि होता है |मैक्सिक गोर्की कहता है- "लेखक राष्ट्र का विवेक होता है|"[१६] (आलोचना पृष्ठ ५५ जनवरी-मार्च २००७)| यह जो राष्ट्र का विवेक है वही साहित्य का मानव पक्ष है | तुलसीदास जब राजा के विषय में कहते हैं

मुखिया मुख सो चाहिए खान पान को एक
पालई पोसई सकल अंग तुलसी सहित विवेक| (तुलसी के दोहे)

तब मनुष्यता की ही बात करते हैं | विवेक पृथक्करण की शक्ति है,जो मानव को सही और गलत, न्याय और अन्याय के बीच की दृष्टि देता है | इसीलिये भारतीय वांग्मय विवेक को विशेष महत्व देता है | मनुष्य और पशु का जो अंतर है, वह उसकी विवेक शक्ति के ही कारण| अन्यथा आहार,निद्रा,भयऔर संतान मनुष्य और पशु में एकदम समान हैं-

आहार निद्रा भय मैथुनांच सामान्यमेतद पशुभिः नराणां
धर्मो ही तेषाम अधिकः विशेषः धर्मेण हिनाः पशुभिः समाना|
(महाभारत)

यहाँ जो धर्म को विशेष स्थान दिया गया है वह उसके विवेक के करण और विवेक को मानवता के करण | साहित्य हमें विवेक से जोड़ता है और विवेक मनुष्यता से |उर्दू कवि फिराक कहते हैं –"शायरी हमारी इंसानियत वापस कर देती है जिससे हम जमीन को अपना सकें,उसे लिपट सकें| इसी कमी की पूर्ति का नाम है 'कविता रचना'|"[१७] (रचना के सरोकार में उद्धृत पृष्ठ- २२- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी)| **जिगर मुरादाबादी** का एक शेर है-

उसका जो फर्ज है अहले सियासत समझे
अपना पैगाम मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे |

साहित्य का पैगाम मुहब्बत अर्थात् प्रेम का पैगाम है | प्रेम ही मनुष्यता का आधार है | प्रेम की ही अभिव्यक्ति बंधुत्व,मैत्री,वात्सल्य,दाम्पत्य आदि विभिन्न प्रकार के संबंधों में इश्वर-भक्ति,देश-सेवा,प्रकृति के साथ लगाव आदि विभिन्न प्रकार के भावनाओं के रूप में होती है| साहित्य इन भावनाओं के उन्नयन का,परिमार्जन का,संस्कार का और विस्तार का एक सशक्त माध्यम है |

सन्दर्भ :

१.हजारी प्रसाद द्वेदी –संकलित निबंध-संपादक- नामवर सिंह- पृष्ठ ८५ |
२.साहित्य बोध: आधुनिकता के तत्त्व- (निबंध)-अज्ञेय |
३.रसमीमांसा- आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल-पृष्ठ ५ |
४.साहित्यालोचन-डॉ श्याम सुन्दर दास-पृष्ठ ३१ |
५.साहित्य सहचर-हजारी प्रसाद द्वेदी-पृष्ठ-१,२,३ |
६.बाल्मीकि-रामायण |
७. भारतीय एवं पाश्चत्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा- पृष्ठ ७- रामचंद्र तिवारी|
८.नाट्यशास्त्र |
९.रामचरितमानस |
१०.पद्मावत |
११.महाभारत |
१२.उपनिषद |
१३.भारतीय संस्कृति कुछ विचार-डॉ राधाकृष्णन-पृष्ठ ८८ |
१४.साहित्य के दृष्टिकोण (निबंध)-मुक्तिबोध |
१५.साहित्य सहचर- पृष्ठ ५ |
१६.चेतना का संस्कार(निबंध)-अज्ञेय |
१७.कविता का पक्ष-रामस्वरूप चतुर्वेदी-पृष्ठ १८|
१८.रचना के सरोकार-पृष्ठ २१-विश्वनाथ प्रसाद तिवारी(विशेष रूप से ध्यातव्य) |
१९.सृजनशीलता-पृष्ठ ७९-रमेश उपाध्याय |
२०.चिंतामणि- प्रथम भाग- 'कविता क्या है' नामक निबंध-आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल |

२१.कवि कर्त्तव्य(निबंध)- महावीर प्रसाद द्वेदी |
२२.आलोचना समय और साहित्य-पृष्ठ १७ रमेश दवे |
२३.आलोचना-पृष्ठ ५५- जनवरी-मार्च २००७ |
२४.तुलसी के दोहे(संकलन) |
२५.रचना के सरोकार- पृष्ठ २२-विश्वनाथ प्रसाद तिवारी |
२६.शेर(संकलन) –जिगर मुरादाबादी |